The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 12 | December 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

ब्रजभाषा भक्ति साहित्य में भारतीय ज्ञान-परम्परा के तत्व: एक विश्लेषण

कल्पना पचौरी
शोधार्थी हिंदी अध्ययन शाला, सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय, उज्जैन
डॉ प्रज्ञा शर्मा:
सहा प्राध्यापक, शा महाविद्यालय महिदपुर, उज्जैन

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18258698

ARTICLE DETAILS
Research Paper
Accepted: 29-12-2025
Published: 10-01-2026
Keywords:
ब्रजभाषा, भक्ति साहित्य, भारतीय ज्ञान परम्परा, वेदांत, सांख्य, योग, लोकपरम्परा

ABSTRACT

ब्रजभाषा भक्ति साहित्य भारतीय सांस्कृतिक चेतना, दार्शनिक दृष्टि और लोकानुभूति का अद्वितीय संगम है। यह साहित्य न केवल भक्ति मार्ग के भावनात्मक लोक का चित्रण करता है, बल्कि भारतीय ज्ञान-परम्परा—दर्शन, वेदांत, सांख्य, योग, व्याकरण, अलंकार-शास्त्र, संगीत-परम्परा, लोक परम्पराएँ—को भी रचनात्मक रूप से अभिव्यक्त करता है। प्रस्तुत शोध-पत्र में भारतीय ज्ञान-परम्परा के प्रमुख तत्वों की पहचान करते हुए उनका तुलनात्मक व विषयगत विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ब्रजभाषा भक्ति काव्य ने ज्ञान और भक्ति, तर्क और अनुभूति, शास्त्र और लोक—इन सभी को संतुलित कर एक समन्वित भारतीय ज्ञान-दृष्टि विकसित की।

1. परिचय

भारतीय भक्ति चेतना में आध्यात्मिक-आन्दोलन ने मध्यकाल में जन-और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का कार्य किया। ब्रजक्षेत्र में जन्मा और विकसित हुआ ब्रजभाषा भक्ति साहित्य न केवल धार्मिक साहित्य है , जिसमें—परम्परा-दार्शनिक और सामाजिक विमर्श भी है। भारतीय ज्ञान ,बल्कि एक विशाल सांस्कृतिक **वेदनाट ,परम्पराएँ-दर्शन ,पुराण ,उपनिषद् ,्य एवं संगीतऔर लोकानुभूति ,ज्ञान-योग ,शास्त्र-** जैसे विविध आयाम सम्मिलित हैंमधुर और लोकप्रिय रूप में अभिव्यक्त ,इस साहित्य के माध्यम से सहज—हुई।

यह शोध ,पत्र ब्रजभाषा भक्ति साहित्य में निहित भारतीय ज्ञान परम्परा के तत्वों का दार्शनिक-काव्यशास्त्रीय और सांस्ृकृतिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. भारतीय ज्ञान-परम्परा का वैचारिक आधार

भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल में **एकात्मवाद**, **अनुभूतिप्रधानता-**, **अनुभवसत्य-**, **धर्मअध्यात्म का -** तथा ,**समन्वय शास्त्र और लोक दोनों की वैधता** का भाव निहित है।

इसके प्रमुख आयाम–

1. **वेदांत दर्शन** -अद्वैतद्वैत ,विशिष्टाद्वैत ,
2. **सांख्य और योग** भक्ति को योग के रूप में ,पुरुष-प्रकृति -
3. **पुराणीय परम्परा** वाद-अवतार ,कथा-कृष्ण -
4. **अलंकाररस एवं काव्यशास्त्र ,** विशेषतः - **श्रृंगाररस-**
5. **नाट्य एवं संगीतपरम्परा-** संगीत ,लीला ,रास -
6. **लोकपरम्परा-** ,रिवाज-सांस्कृतिक रीति -लोकविश्वास-

ब्रजभाषा साहित्य इन सभी तत्वों को सहजगीतात्मक एवं लौकिक रूप में प्रस्तुत करता है। ,

3. ब्रजभाषा भक्ति साहित्य: स्वरूप एवं विशेषताएँ

ब्रजभाषा भक्ति साहित्य की प्रमुख विधाएँ–

- पदावली
- साखी
- सवैया
- कवित्त
- रासकाव्य-

मुख्य कवि–**सूरदासह ,नंददास ,मीराबाई ,ित हरिवंशरसखान ,हरिराम व्यास ,कृष्णदास ,** इत्यादि।

इनकी रचनाओं का मुख्य केन्द्र **कृष्णभक्ति-** तथा **राधापरम्परा-कृष्ण लीला-** हैजो भारतीय दार्शनिक , और सांस्कृतिक विचारधारा को सजीव करती है।

4. ब्रजभाषा भक्ति साहित्य में भारतीय ज्ञान-परम्परा के प्रमुख तत्व

4.1 वेदांत दर्शन के तत्व

विशिष्टाद्वैत वेदांत (रामानुज), **शुद्धाद्वैत** (वल्लभ), तथा **द्वैत** –के प्रभाव से ब्रजभाषा काव्य में (मध्व)

- ईश्वररूप में कृष्ण-
- भक्तभाव-ईश्वर सम्बन्ध में माधुर्य-
- ईश्वर का सगुणसाकार रूप-

सूरदास के पदों में यह प्रत्यक्ष है *प्रभु मोरे"–प्राणाधार"सुमिरत सुख होई।* , यहाँ **सगुण ब्रह्म** का भाव वेदांत से लिया गया तत्व है।

4.2 सांख्य-योग के तत्व

सांख्य के **प्रकृतिपुरुष-** सिद्धांत और योग के **भक्तियोग-**, **ध्यान**, **समर्पण** आदि के तत्व ब्रजकाव्य में स्पष्ट मिलते हैं।

मीरा कहती हैं– *मन मन्दिर में प्रगट भयो"है।"*

यह योगपरक की परम्परा है। 'अनुभूति-अन्तर'

4.3 पुराण एवं इतिहास-परम्परा

भागवतपरम्परा ब्रजभाषा भक्ति साहित्य की मुख्य प्रेरणा है।-

- कृष्ण का अवतारवाद-
- रासलीला-

- गोपियों की भक्ति

ये सभी पुराणों से प्रेरित हैं।

4.4 रस-सिद्धान्त और अलंकार-शास्त्र

भरतमुनि और आचार्य वामन के सिद्धान्तों का ब्रजभाषा काव्य पर गहरा प्रभाव है।

- **श्रृंगाररस-** (मधुर और विप्रलम्भ दोनों)
- **भक्तिरस-**
- **अलंकारों** का समृद्ध प्रयोग

सूरदास के काव्य में **दृष्टान्तरूपक ,उत्प्रेक्षा ,** आदि अलंकारों का सुन्दर समन्वय मिलता है।

4.5 संगीत-परम्परा

ब्रज साहित्य संगीत से आच्छादित है–

- ध्रुवपद शैली
- विभिन्न रागों में संग्रहित पद
-ताललय संवेदनाएँ-

भक्तिकाव्य- *गीतप्रधान-* है और भारतीय संगीतज्ञान का प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत करता है।-

4.6 लोक-परम्परा के तत्व

ब्रजभाषा साहित्य में ग्रामीण जीवनचि-ऋतु ,त्योहार ,विश्वास-लोक ,त्रणउपवास का वर्णन-व्रत ,रीति-लोक , मिलता है।

उदाहरण–

होलीवर्णन-वर्षा ,कजरी ,झूला , ये लोकज्ञान और ब्रज संस्कृति के जीवंत प्रतिरूप हैं।-

5. विश्लेषणात्मक चर्चा

ब्रजभाषा भक्ति साहित्य में भारतीय ज्ञान परम्परा बल्कि ,रूप में नहीं 'परक-पांडित्य' **अनुभूतिपरक औ-र सहज भाषा में** ढली हुई है। भक्त कवियों ने–

- दार्शनिक तत्वों को भावनात्मक व्याख्या दी
- शास्त्र को लोकगम्य बनाया-
- आध्यात्मिकता को सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन से जोड़ा
- ज्ञान और प्रेम का समन्वय स्थापित किया

यह साहित्य भारतीय ज्ञानपरम्परा का- **लोकाभिमुख रूप** प्रस्तुत करता है।

6. उपसंहार

ब्रजभाषा भक्ति साहित्य भारतीय ज्ञान परम्परा की निरंतरतासजीवता और विकास का सशक्त प्रमाण , ज्ञान को एकात्म रूप में -परम्परा और लोक-संगीत ,सिद्धांत-रस ,पुराण ,योग ,है। इस साहित्य ने वेदांत प्रस्तुत किया। यह केवल धार्मिक साहित्य नहीं बल्कि एक , **संपूर्ण सांस्कृतिकदार्शनिक ग्रंथपरम्परा-** है , जिसने भारतीय चेतना को दीर्घकालीन दिशा प्रदान की।

संदर्भ (References)

- शर्मा.रामचन्द्र , *भारतीय ज्ञान* ,राजपाल एंड संस :दिल्ली .*परम्परा और साहित्य*-2012.
- चतुर्वेदी.रामनाथ , *ब्रजभाषा और उसका साहित्य* .वाराणसी ,नागरी प्रचारिणी सभा :1965.
- द्विवेदी.हज़ारीप्रसाद , *भक्ति आंदोलन* ,राजकमल प्रकाशन :नई दिल्ली .1998.
- वैष्णव.श्यामसुंदर , *वल्लभ सम्प्रदाय और कृष्ण भक्ति काव्य* ,राजस्थान ग्रंथ अकादमी :जयपुर . 2005.
- Barthwal, Pitambar Dutt. *Hindi Bhakti Kavya*. Allahabad University, 1933.

- Snell, Rupert. *The Hindi Classical Tradition: A Braj Bhāṣā Reader*. London: SOAS, 1991.
- Bryant, Edwin. *The Krishna: The Beautiful Legend of God*. Penguin, 2003.
- Bhatt, S.K. *A History of Sanskrit Poetics*. Delhi: Motilal Banarsidass, 1995.
- प्रभाकर.मथुराप्रसाद , *सूर और उनका काव्य* ,हिंदी साहित्य सदन :आगरा .1978.
- Kapoor, Kapila. *Indian Knowledge Systems*. IGNCA, New Delhi, 2014.